GREEN REVOLUTION

What do you mean by green revolution? How for its has been successful in India?

हरित क्रांति से आप क्या समझते हैं? यह भारत में कहाँ तक सफल हुआ है?

Ans: :अधिक उपज देने वाले उन्नत बीज रासा- यनिक उर्वरक, समुचित सिंचाई व्यवस्था, आधुनिक उपकरण नई तकनीक एवं कृषि क्षेत्र में लाए जाने वाले कृषि क्रान्ति को ही हरित क्रान्ति" का कहा जाता है।

"Green revolution means is Intensive forming increased imputes, bumper harvests and consequent more employment potential"

कृषि क्रांति के बिना भारत का आर्थिक विकास सम्भाव नहीं हो सकता क्योंकि देश की जनसंख्या के लिए कृषि पर निर्भर करता है।

भारत ने 1963 से ही नई कृषि नीति का राष्ट्रीय स्तर पर कार्यान्वित किया जाने लगा। लेकिन हरित क्रान्ति का जन्म चतुर्य योजना के प्रारंभ में हुआ ' हरित क्रान्ति के लिए बहुत से कारण उतरदायी है। लेकिन इनमें सबसे अधिक गौरवपूर्ण स्थान भारतीय कृषि अनु- संधान परिषद तथा लुधियाना एवं पंतनगर में कृषि विश्वविद्यालय को है। यह हरित क्रांति मुख्यतः भारी उपज देने वाले वीजों का परिणाम है।

प्रथम योजना में कृषि उत्पादन में 22.2% एवं द्वितीय योजना में 24.7% वृद्धि हुई। तृतीय योजना में कृषि उत्पादन 7.4% व्या गई एवं बा खादीन का उत्पादन 14.5% धय। भारत जैसे देश जो जनसंख्या विस्फोट की दौर से गुजर रही है। अगर कृषि आधार छिन्न होगा तो इसका छर्दनाक कुपरिणाम अनाज के अभाव में करोड़ो की मौत होगी। इसलिए भारत सरकार ने हरित क्रान्ति के लिए अनेक उपाय किए. है जो निम्न हैं:

"हरित कृषि के तत्व या कारण : →

भारत सरकार की नई कृषि नीति ही हरित क्रान्ति का मुख्य तत्व या कारण बना जो निम्नलिखित है:

(1) उम्मत बीजों का प्रयोग : →

कृषि अनुसंधान के अन्तर्गत उत्तर चीजों का खोज कर इसका प्रयोग देश में किया जा रहा है। इसके प्रयोग से उत्पादन में दुगुणी वृद्धि की जा सकती है। उन्नत बीजों का प्रयोग 1970-71 में 196 लाख हेक्टेयर भूमी में होता था। वह बढ़कर 1990-91 में 136 लाख हेक्टेयर हो गया एवं 1991-92 में 700 लाख हेक्टेयर की योजना है। इन बीजों में गेहूं का कल्याण, सोना, हीरा आदि एवं चावल का पदमा 1. R.S. आदि हैं।

(2) उर्वरको का प्रयोग : →

कृषि वैज्ञानिकों के आधार पर एक टन उर्वरक के प्रयोग से उत्पादन 10 टन बढ़ाया जा सकता है। उर्वरकों के प्रयोग में भारत का स्थान विश्व में दुसरा है। 1970-71 में भारत में 22 लाख टन उर्वरकों का प्रयोग किया गया जो बढ़कर 89-90 में 116 लाख टन एवं 90-91 में 136 लाख स हो गया।

(3) सिचाई सुविधा में वृद्धिः →

सिंचाई सुविधा का विस्तार कर कृषि अधिक बढ़ाया जा सकता है। क्योंकि भारत में उत्पादन दुगुना से सिंचाई के अभाव में अधिकांश भूमी से साल में तीन फैसल के स्थान पर एक ही फैसल उगाया जा सकता है 1960-61 में 279 लाख हेक्टेयर भूमी में सिंचाई की सुविधा उपलब्ध की जो बढ़कर 1990-91 में 741 लाख हेक्टेयर हो गया एवं 1991-92 में 763 लाख हेक्टेयर करने का लक्ष्य हैं।

Scanned with OKEN Scanner

(4) आधुनिक कृषि यंत्रों का उपयोग : →

हरित क्रान्ति लाने में आधुनिक कृषि यंत्रों जैसे: → ट्रैक्टरों, पम्प सैर, आदि का महत्वपूर्ण योगदान रहा।

5 किटानु नाशक औषधियों का प्रयोग:-

किरातुनाशक का प्रयोग पौधों की विभिन्न रोगों से बचाने के लिए किया जाता है इससे उत्पादन में वृद्धि होती है 1973-74 तक 30,00021 किरानुनाशक औषधियों का प्रयोग किया गया जो बढ़कर 1990-91 में 82000 टन एवं 1991-92 में 83000 टन का लक्ष्य है।

(6.) मूल्य सम्बन्धि प्रोत्साहन : →.

किसानों को अनेक फैसलो के बदले लाभप्रद मूल्पों के मिलने पर उन्हें उत्पादन में वृद्धि करने का प्रोत्साहन मिलता है। सरकार इसके लिए न्यूनतम मूल्य (support price) की घोषणा करती है। इसी मूल्य पर सरकार किसानों से अनाज खरीदती हैं।

7. बहुफसल कार्यक्रम : +→

अनुसंधान के माध्यम कम समय में अधिक फसल देनेवाले बीजों के विकास से साल में कई बार ऐसे फसलों को उपजाया जा सकता है। यह कार्यक्रम धान, मकई, और बाजरा के लिए अधिक सफल हुआ।

(8) कृषि साख की सुविधा :

देश में राष्ट्रीयकृत बैंकों सहकारी बैंक के केन्द्रिय, ग्रामीण बैंक आदि किसानों को साख की सुविधा प्रदान कर रहे हैं। 1985-86 में 6805 करोड़ एवं 1991-92 में 15.455 करोड़. कृषि साख की सुविधा उपलब्ध कराई गई।

(9) कृषि अनुसंधान :- वर्तमान समय में भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के अतिरिक्त 18 कृषि विश्व विद्या- लय, कृषि उत्पादन में वृद्धि करने के लिए अनुसंधान किए जा रहे हैं।

<u>हरित क्रांति की उपलब्धियाँ कहाँ तक सफल हुआ</u>

1) कुल उत्पादन में वृद्धि:

हरित क्रांति के फलस्वरूप भारतीय कृषि में कुल उत्पादन में वृद्धि हुई।

अनाज	1978-79 (उत्पादन	1989-90 मिलियन टन	1990-91 में में)	2001
चावल	53.8	73.6	74.6	
गेहूँ	35.5	49.8	54.5	
दलहन	12.2	12.9	14.9	
खरीफ	78.1	101.0	99.9	
रबी	53.8	70.0	76.3	

इस सारणी के अनुसार भारत के कृषि 'उत्पादन में कुल वृद्धि हुई हैं। सिर्फ खरीफ का उत्पादन 1990-91 में चोड़ा सा घरा लेकिन गेहूँ के उत्पादन में वृद्धि दर सबसे अधिक रहीं।

Scanned with OKEN Scanner

2 प्रति हेक्टेयर उत्पादन में वृद्धि:-

हरित क्रान्ति के फलस्वरूप भारतीय कृषि की उत्पादकता में भी वृद्धि हुई हैं।

अनाज	1960-61 (क्विंटल/हेक्टेयर	1979-80 प्रति हेक्टेयर	1987-88 (क्विंटल में)
चावल	10.13	10.82	14.83
गेहूँ	8.51	14.36	19.95
ज्वार	5.53	6.85	7.57
बाजरा	2.86	3.77	3.78

उपयुक्त सारणी का अर्थ यह है कि भारत में कृषि उत्पादकता में हरित क्रान्ति के फलस्वरूप काफी वृद्धि हुई लेकिन गेहूँ, की उत्पादकता की वृद्धि दर सबसे अधिक रही! गेहूँ के कुल उत्पादन एवं प्रति हेक्टेयर उत्पादन दोनों में सबसे अधिक हुई। इसलिए हरित क्रांति को मुख्यतः (खेहूँ क्रांति (Wheat Revolution) कहा जाता हैं।

3. कृषि क्षेत्र में वृद्धि:

हरित क्रान्ति के फलस्वरूप अधिक भूमी में खेती की जाने लगी।

अनाज	1960-61 (कृषि क्षेत्र	79-80 फल लाख	87-88 हेक्टेयर में)
चावल	341.3	390.0	388.2
गेहूँ	129.3	220.0	226.0
ज्वार	184.1	165.0	156.5
बाजरा	114.7	106.0	86.9

चावल, ज्वार, एवं बाजरा तीनों अनाजों का कृषि क्षेत्र क्रमशः घटता गया है। सिर्फ गेहूँ, एक ऐसा फसल है जिसके क्षेत्र में वृद्धि हुई है। इससे स्पष्ट होता हैं कि भारत के लोगों के उपयोग की प्रवृति का विस्वतावन गेहूँ की ओर झुका हुआ हैं।।

(4.) **उत्पादन की वृद्धि दर में वृद्धि** : → 1901-1950 तक कृषि उत्पादन में वृद्धि दर 25% वार्षिक की जो बढ़कर 1950-80 के बीच १% वार्षिक हो गई।

5. व्यवसायिक लायन

कृषि उत्पादन में अत्याधिक वृद्धि होने से किसानों ने यह महसुश किया की कृषि सिर्फ जीवोको- पार्जन कान्ही साधन नहीं है बल्कि एक व्यवसाय भी है। जिससे लाभ की प्राप्ति की जा सकती हैं।

6 खाधानों का पर्याप्त भंडारक

Scanned with OKEN Scanner

हरित क्रान्ति के फलस्वरूप गेहूँ की दृष्टि में भारत आत्म निर्भर हो गया। अन्य खाधान्य के अभाव को भी दूर किया गया। एवं करोड़ो लोगो को भूखमरी से बचाया जा सका

1 हरित क्रांति की आलोचनाएँ : →

1) सीमित फसलों पर प्रभाव:->

हरित क्रान्ति के अन्तर्गत मुख्यतः गेहूँ के उत्पादन में सबसे अधिक वृद्धि हुई। गेहूँ के अतिरिक्त चावल, ज्वार, बाजरा मक्का एवं गले के उत्पादन में भी वृद्धि हुई हैं। शेष फसलों पर कोई प्रभाव नहीं पड़ा है।

(2) सीमित क्षेत्रों पर प्रभाव :

हरित क्रान्ति का प्रभाव मुख्य रूप से पंजाब, हरियाणा, पं उत्तर प्रदेश, आंध्र प्रदेश महाराष्ट्र एवं तामिलनाडू के कुछ क्षेत्रों तक ही सीमित रहा। देश का एक बड़ा भाग इस क्रान्ति से वंचित रह गया। जिससे क्षेत्रिय विषमता में वृद्धि हुई हैं।

(3) अपूर्ण एवं अस्थाई श्रुतिः

हरित क्रांति का प्रभाव न तो स्थाई रूप से पड़ा और न ही पूर्णतः पड़ा।

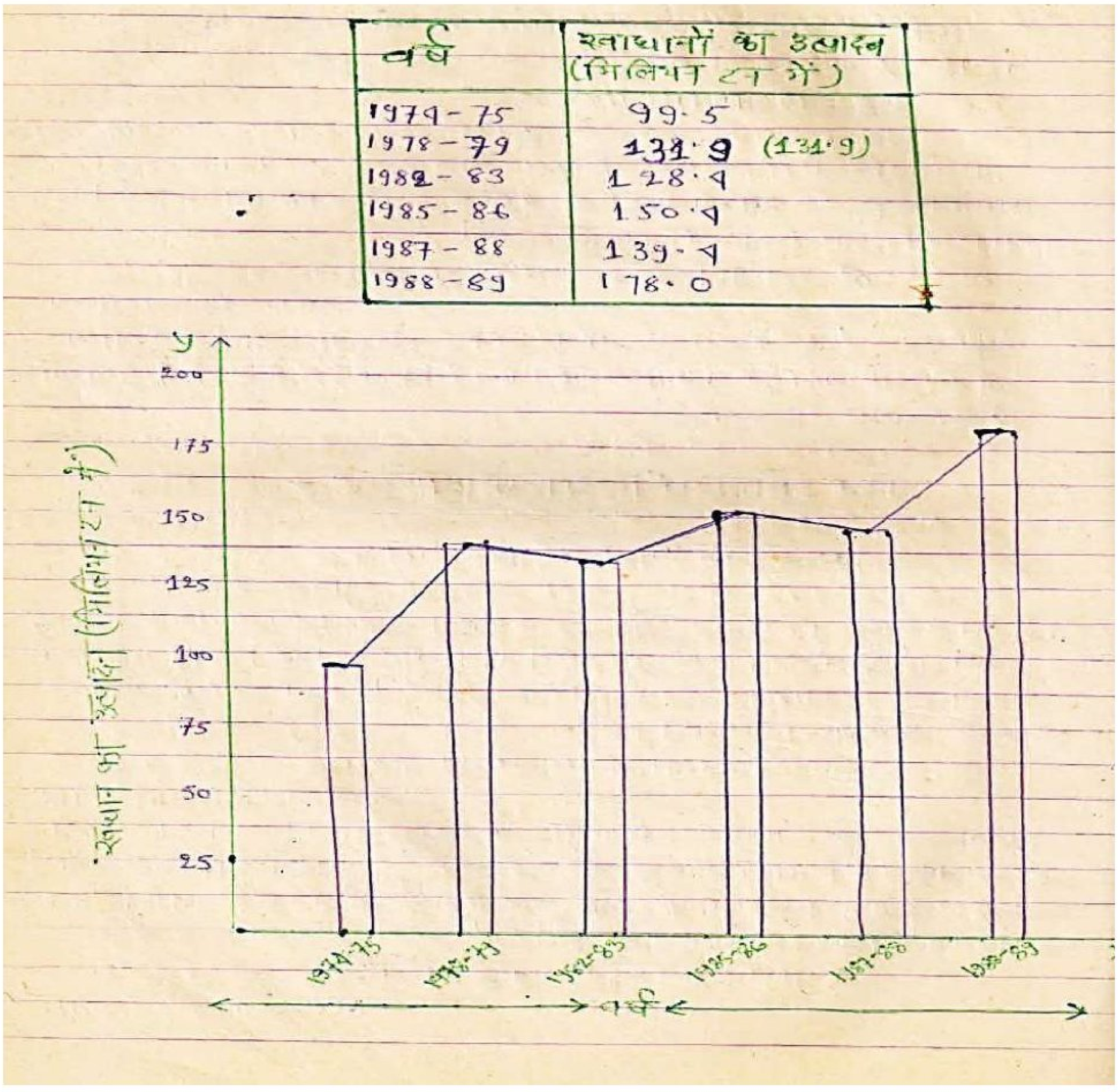

वर्ष	खाद्यानों का उत्पादन (मिलियन टन में)
1974-75	99.5
1978-79	131.9 (131.9)
1982-83	128.4
1985-86	150.4
1987-88	139.4
1988-89	178.0

उपयुक्त रेखाचित्र से यह स्पष्ट है कि स्वाधान के उत्पादन में लगातार वृद्धि नहीं हुई। उत्पादन में कभी वृद्धि हुई तो कमी कमी। खाधानों के उत्पादन में अगर तीव्र गति से लगातार वृद्धि हुई होती तभी इस क्रांति को 1. पूर्ण एवं स्थाई माना जाता।

4. आर्थिक विषमता में वृद्धि : → हरित क्रांति के अन्तर्गत तर तकनीक एवं आधुनिक उपकरण अपनाने के लिए 1 बड़ी पूंजी की आवश्यकता होती है। इसीलिए केवल धनी किसान ही इसी इसे अपना कर इससे लाभान्वित हुई। गरीब किसान को कोई लाभ नहीं हुआ। असेब अतः आर्थिक विषमता में वृद्धि हुई।

5.) संस्थागत सुधारों की अवहेलना → हरित क्रांति के अन्तर्गत सूमी सुधार एवं भूमि सम्बन्ध की अवहेलना की गई। जोतों की सीमा निर्धारण, चकबंदी, सहकारी कृषि आदि में संतोषजनक वृद्धि नहीं हुई।

6. वेरोजगारी में वृद्धि :

भारत एक प्राय प्रज्ञान कृषि प्रधान देश है। कृषि में मंत्रिकरण से बहुत से प्राधिक बेरोजगारी हो गए हैं।

CONCLUSION

हरित क्रान्ति भारत के लिए वरदान सिद्ध हुआ है। लेकिन इसका व्यापक प्रभाव सम्पूर्ण क्षेत्र पर तभी पड़ेगा जब इसका लाभ-गरीब किसानों को भी प्राप्त होगा। अतः इसे आसान किस्तों पर सस्ते दर पर कृषि साख की व्यवस्था की जानी चाहिए।

Scanned with OKEN Scanner